2

जब हवा चलती है.....

(शिक्षाप्रद कहानी)

प्रतिध्वनि

"तैयारी में विफल होने का मतलब है, विफल होने की तैयारी करना" – बेंजामिन फ्रैंकलिन

बहुत समय पहले की बात है, कर्नाटक के उत्तरी छोर पर एक किसान रहता था। उसे अपने खेत में काम करने वालों की बड़ी जरूरत रहती थी, लेकिन ऐसी खतरनाक जगह, जहाँ आए दिन आँधी- तूफान आते रहते हों, कोई काम करने को तैयार नहीं होता था।

किसान ने एक दिन शहर के अखबार में इश्तहार दिया कि उसे खेत में काम करने वाले एक मज़दूर की जरूरत है। किसान से मिलने कई लोग आए लेकिन जो भी उस जगह के बारे में सुनता, वो काम करने से मना कर देता। अंतत: एक सामान्य कद का पतला-दुबला अधेड़ व्यक्ति किसान के पास पहुँचा।

किसान ने उससे पूछा, "क्या तुम इन परिस्थितियों में काम कर सकते हो?"

"हाँ, बस जब हवा चलती है तब मैं सोता हूँ," व्यक्ति ने उत्तर दिया।

किसान को उसका उत्तर थोड़ा अजीब लगा लेकिन उसे कोई और काम करने वाला नहीं मिल रहा था इसलिए उसने व्यक्ति को काम पर रख लिया।

मजदूर मेहनती निकला। वह सुबह से शाम तक खेतों में मेहनत करता। किसान भी उससे काफी संतुष्ट था। कुछ ही दिन बीते थे कि एक रात अचानक ही जोर-जोर से हवा बहने लगी। किसान अपने अनुभव से समझ गया कि अब तूफान आने वाला है। वह तेजी से उठा, हाथ में लालटेन ली और मजदूर के झोंपड़े की तरफ दौड़ा।

"जल्दी उठो, देखते नहीं तूफ़ान आने वाला है। इससे पहले कि सब कुछ तबाह हो जाए, कटी फसलों को बाँधकर ढक दो और बाड़े के गेट को भी रस्सियों से बाँध दो" किसान चीखा।

मजदूर बड़े आराम से पलटा और बोला, "नहीं जनाब! मैंने आपसे पहले ही कहा था कि जब हवा चलती है तो मैं सोता हूँ।"

Scanned with CamScanner